विलोम शब्द सिखाना | कक्षा में मेरी रणनीति

पोम्पा घोषाल

मुझे याद है, जब मैं तीसरी कक्षा में थी तो हमारी शिक्षिका हमें विलोम शब्दों की एक सूची दे देती थीं, उनके अर्थ बताती थीं और फ़िर वे हमें सभी शब्द याद करने को कहती थीं। अगले दिन वे पूछतीं कि हमने वे शब्द याद कर लिए या नहीं। मुझे याद है कि किसी भी उदाहरण या चित्र के बिना उन शब्दों को सीखना कितना कठिन होता था। इसलिए मैं कक्षा में विलोम शब्द सिखाने के अपने एक अनुभव को साझा करना चाहूँगी। लेकिन उससे पहले मैं इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूँ कि बच्चे अपनी प्रथम भाषा या मातृभाषा के अलावा भी कोई अन्य भाषा सीख सकते हैं, भले ही उन्हें पहले उस भाषा को सीखने का अवसर न मिला हो। प्रत्येक बच्चे में सीखने की क्षमता होती है। आवश्यकता इस बात की है कि हम शिक्षक नई अवधारणा सिखाने के लिए बच्चों के मौजूदा ज्ञान का उपयोग करें।

मैं एक उदाहरण देती हूँ। मैं दूसरी कक्षा में विलोम शब्दों के बारे में पढ़ा रही थी। मैंने कक्षा की शुरुआत में बच्चों से पूछा, "आपके अनुसार विलोम का क्या मतलब है?" बच्चों ने कहा कि उन्हें नहीं मालूम। मैंने हाथी और चूहे की तस्वीर दिखाकर बड़े और छोटे का उदाहरण दिया। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे एक ही आकार के दिखते हैं। बच्चों ने कहा, "नहीं, हाथी बड़ा है और चूहा छोटा।"

मैंने कहा, "हाँ, हाथी बड़ा है यानी बिग और चूहा छोटा या स्मॉल है। क्या आप मुझे कुछ अन्य बड़ी और छोटी चीज़ों के बारे में बता सकते हैं जिन्हें आप जानते हों?"

उन्होंने कहा गाय-कुत्ता, कुत्ता-बिल्ली, घोड़ा-कुत्ता आदि।

फिर मैंने नारियल के पेड़ और गुलाब की झाड़ी की एक तस्वीर दिखाकर लम्बा और नाटा समझाया और बच्चों को अपने अनुभव से कुछ और उदाहरण देने के लिए कहा। बच्चों ने अपने लम्बे और नाटे सहपाठियों और शिक्षकों की पहचान करके लम्बे और नाटे की अवधारणाओं को समझा।

जब मैं अगले दिन कक्षा में गई तो बच्चों ने बड़े-छोटे और लम्बे नाटे के कई उदाहरण दिए, जैसे लम्बे नाटे के लिए पिता और माता, शिक्षक और मैं; बड़े और छोटे के लिए कमरा और गुड़िया, स्कूल की इमारत और खिलौने आदि। मुझे एहसास हुआ कि मैंने कल उन्हें जो शब्द बताए थे, उनके कारण इन बच्चों ने ऐसे उदाहरण खोजने के बारे में सोचा। फिर हमने कठोर और कोमल (लकड़ी और कपास) शब्दों के साथ इस विषय को जारी रखा। बच्चे आए, कपास को छुआ और कहा, मुलायम का मतलब है कोमल। फिर बच्चे चॉक और डस्टर जैसे कई उदाहरण देने लगे। उन्होंने कहा, 'डस्टर कठोर है; चॉक कोमल है।'

हमने छोटे समूहों में इस गतिविधि को जारी रखा और मेरा अवलोकन यह था कि जो बच्चे आमतौर पर कक्षा में सक्रिय नहीं रहते थे, वे भी दिए गए काग़ज़ पर अपने शब्द लिखने के लिए उत्साहित दिख रहे थे और कक्षा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए कठिन प्रयास कर रहे थे। उन्होंने भी बेहतरीन उदाहरण दिए। इसने बच्चों की अवधारणा की समझ को इतना मज़बूत बना दिया कि यह उनकी स्मृति में बना रहा।

वे बच्चे अब तीसरी कक्षा में हैं और उन्हें अभी भी विलोम शब्द इतनी अच्छी तरह से याद हैं कि जब भी मैं उनसे पूछती हूँ, वे बिना तुरन्त सही जवाब दे देते हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि जिस किसी भी विषय के बारे में हम पढ़ाते हैं, विशेष रूप से वे विषय जिनके लिए अवधारणात्मक समझ की आवश्यकता है, उसमें हमें विद्यार्थियों को शामिल करना चाहिए ताकि वे गहरी रुचि लें और 'रटना' बन्द हो जाए, लेकिन अवधारणाओं की समझ गहरी हो जाए।

पोम्पा घोषाल अप्रैल 2016 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी में अध्यापन कर रही हैं। उन्होंने रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर से गणित में स्नातक, अँग्रेज़ी साहित्य में एमए और बीएड की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान से डीएलएड की पढ़ाई भी पूरी की है। उन्होंने अपने अध्यापन कार्य की शुरुआत 1997 में एक निजी स्कूल से की और गणित, विज्ञान और अँग्रेज़ी शिक्षक के रूप में कई स्कूलों में कार्य किया। वे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रुचि रखती हैं। उनसे pompa.ghoshal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल